प्रात:×क्लास रात्रि क्लास 20-12-68 शिव बाबा याद है?

गाया जाता है गोदरी में कलतार ... यह शरीर तो बड़ा है इनमें है बाप। इनको गोदरी कहते हैं। तो कब यह राजाई भी पहन कर आते हैं। अभी तो ज्ञान की बातों में सभी बुधि चलती रहती है। क्या करें जो मनुष्यों को समझ में आवे। बाप तो है नालेजफुल। बीज रूप चैतन्य है। उनको ही नालेज है यह चक्र कैसे फिरता है। ऋषियों मुनियों से पूछा बाप को जानते हो। तो नेती2 कहते हैं। म्युजियम में तो बड़े2 अक्षरों में लिखना चाहिए। बेहद का बाप जिसको भगवान कहा जाता है उनके जीवन कहानी को कोई भी नहीं जानते। गायन करते हैं परन्तु कब आये वह नहीं जानते। अज्ञान की नींद में सोये पड़े हैं। अभी तुम जानते हो हम भी बाप को नहीं जानते थे। आत्मा सितारा है यह भी कहते हैं। सुनी सुनाई बात कह देते हैं। शास्त्र भी देहधारी मनुष्यों ने बनाई है ना। व्यास भगवान का कहें वा कृष्ण भगवान का कहें। भगवान तो है बाप। व्यास भगवान के शास्त्रों को बैठे बाप सिध कर बताते हैं। कहा जाता है आटे में लुन। दो चार शब्द निकालेंगे। शिव पुराण भी है उनमें भी कुछ न कुछ अक्षर निकाल कर देंगे। बच्चे समझते हैं बाप सभी वेदों, शास्त्रों का सार बताते हैं। कोई भी ऐसा शास्त्र नहीं हैं जिसमें हो भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाये राजाओं का राजा बनाता हूं। यह सतयुग के मालिक हैं ना। तो सिध होता है भगवान ही आकर राजयोग सिखाते हैं। नई दुनिया स्थापन करते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। ऊंच बनने का युग। नर से ना0 नारी से लक्ष्मी। उत्तम पुरुष तो और कोई है नहीं। परमात्मा बैठ तुमको उत्तम बनाते हैं। हरेक पायन्ट है। कल्प 5000 वर्ष का है और राजयोग कोई मनुष्य सिखा नहीं सकते। तुम्हारी आत्मा सिखलाती है। लिखते हैं फलानी आत्मा लिखती है। तुम विद्या भी पढ़ते हो तो धारणा आत्मा में होती है। अंग तो सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी संस्कार कौन ले जाती है। आत्मा पढ़ती है। यह बाप ने समझाया है आत्मा अमर है। कहेंगे बुधि पढ़ती है। परन्तु बुधि किसमें है। शरीर की बुधि है या आत्मा की बुधि है। पतित वा पावन बुधि बनती है। आत्मा में मन बुधि है तो आत्मा ही कहो ना। हमारी आत्मा इस समय पतित है। इसलिये बुलाते हैं। आत्मा गोल्डनएज है तो शरीर भी गोल्डनएज मिलता है। ऐसी2 टापिक्स निकालनी चाहिए। हरेक अपने2 टापिक उठा ले। औरों को बैठ समझावे। पढ़ने का नहीं है। औरों को टाईम तो देते हैं ना फलाने का भाषण। फिर फलाने का भाषण होगा। लिखते में नहीं। पढ़कर सुनाना शोभता नहीं है। वह तो नेचरल नहीं हुआ ना। अच्छा नहीं है। बेवियां ऐसे करेंगे। बाबा क्या उठाते हैं। कुछ भी नहीं। बाबा गीता कितना पढ़ते थे। बूढ़े ही आकर सुनते थे। उस समय ज्ञान तो नहीं था। छोटेपन से प्रैक्टीस भी है। बाबा ग्रन्थ भी पढ़ा हुआ है। बच्चों के पास अथाह धन है। सारा दिन बुधि चलना चाहिए कैसे किसको दान देवें। टापिक है ना। मुख्य बात सर्वव्यापी है। यह कहां से आया। गीता में अक्षर है। तुम कहेंगे बाबा से पूछा गया है गीता में यह आप ने लिखा है क्या। कहा नहीं बच्चे यह मनुष्य मत है। भक्ति मार्ग में आधा कल्प मनुष्य मत रावण मत है। अभी तुमको श्रीमत मिलती है। सृष्टि के आदि मध्य अन्त को मनुष्य नहीं जान सकते। मैं ही सुनाता हूं। आदि सनातन देवी देवता धर्म किसने स्थापन किया यह भी कोई नहीं जानते हैं। आपेही बोलते रहे। कृष्ण तो सतयुग का पहला प्रिन्स है। मनुष्य 84 जन्म लेते हैं। ऐसे2 बहुत टापिक निकाल सेज समझा सकते हैं। हमको भगवानक्या पढ़ाते हैं। शिव भगवान कैसे पढ़ाते हैं। बैल भी दिखाते हैं। रथ भी मशहुर है। भागीरथ। भाग्यशाली मनुष्य जिसमें बाप की प्रवेशता होती है। गंगा की बात नहीं। भगवान का रथ है। कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में मैं प्रवेश करता हूं। मेरे लिये कहते भी हैं दूर देश ... पतित तो सभी हैं। सभी पुकारते हैं पावन बनाने आओ। भगवान ऐसे समझाते हैं, मनुष्य ऐसे समझाते हैं। ऐसे2 तुम समझानी देंगे यह तो अच्छा है ना। भगवान ने स्वर्ग कैसे स्थापन किया। शिवजयन्ति मनाते हैं तो बस उसकी ही महिमा बताते हैं। ऊंच ते ऊंच है भगवान। बाप भी है टीचर भी है फिर साथ भी ले जाते हैं। पतित दुनिया में देवताओं का पैर हो न सके। देवतायें यहां हो न सके। तुम बहुत युक्ति से समझा सकते हो। बहुत मजबूत चाहिए। शिवजय0 के दिन ऐसे अपना बताओ शिव बाबा हमको क्या सिखलाते हैं। बेहद के बाप को तुम भूल गये हो। एक

रात्रि 20-12-68

2

ही बात सिध कर दो तो कहेंगे यह तो राईट बताते हैं। यह सभी बातें तुम्हारी बुधि में चलना चाहिए। परिचय देना है अ कहानी रोज सुनेंगे। न सुनेंगे तो कट हो जावेंगी। सतयुग से लेकर कलियुग तक कैसे चक्र फिरता है रोज2 सुनावेंगे। न आवेंगे तो पढ़ाई कट हो जावेंगी। यह सभी ख्यालात करनी है। शिवजयन्ति पर क्या क्या समझाना है। जो मनुष्य समझे। हमको बाप आकर इस रथ द्वारा पढ़ाते हैं। हमारी आत्मा ही पढ़ती है। इसको रूहानी नालेज कहा जाता है। रूहानी बाप ने रूहानी बच्चों को सिखाया है। बुधि में धारण है। बाप बीज रूप है कृष्ण के कब पतित-पावन नहीं कहेंगे। सेमीनार बड़ा होगा। विचार सागर मथन कर स्पीकर बनो। विश्व में शान्ति कैसे होती है। सतयुग से लेकर कलियुग तक क्या2 होता है। तुम सुना सकते हो। विचार सागर मथन करते रहेंगे तो बाप याद रहेंगा। बुधि चलती रहेंगी। हमको धारण करना है। जीवन का कल्याण भी हो जावेंगा। बच्चों को हरदम बाप ही याद आता है ना। कोई भी मनुष्य मात्र को यह पता नहीं होगा हम भविष्य में यह बनेंगे। प्रिन्स बनेंगे सो भी प्रिन्स कौन सा। यह देवता तो मशहुर हैं। दूसरे भी बनेंगे ना। माला बनती है। बहुत बातें हैं। एकान्त में बैठते हैं तो भी यही बताना है बेहद का बाप हमको क्या सिखलाते हैं। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादाका याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 21-12-68:-

---------- हरेक सेन्टर को जितना चाहिए सर्विस का शो करे। जो बाप से सीखे हैं वह औरों को सुनावे। रचयिता और रचना का राज बताना है। जो भूलें हैं वह बतानी हैं। अ बाप कहते हैं मैं जो हूं जैसा हूं कोई मुश्किल ही जानते हैं। यह भी पायन्ट्स है। कृष्ण तो ऐसा है नहीं जिसको कोई जान न सके। सारी सृष्टि भर में उनको जानते हैं। मोर मुकुट वाला है। फिर कृष्ण ऐसा है नहीं जिसको कोई जान न सके। फिर कृष्ण ऐसा क्यों कहे कि विरला कोई जान सकते। ऐसी2 पायन्ट निकालनी है। बाबा ने क्या समझाया है। बाबा अक्षर बहुत मीठा है। यहां अच्छे गीत सुनते हैं परन्तु माया भूला देती है। कहेंगे यह तो हमको सिखलाते थे फिर ट्रैटर बन पड़े हैं। हमको समझाने वाले को माया ग्राह ने खा लिया। बाप ने समझाया है तुम 2। उन्हीं लिये पदमापदमभाग्यशाली बनते हो। फिर माया से हराकर देह अभिमान में आकर बाप को भूल अपनी सत्यानाश करते हो। तो दिल में आता है ना समझावेंगे यह तो जानते हैं जो ट्रैटर बनते हैं कल्प पहले भी बने हैं। जिनमें ज्ञान होगा वह ज्ञान देंगे। ज्ञान न होगा तो उल्टा ही सुनावेंगे। कोई भी प्रकार से कोई डिस रेस्पेक्ट करते हैं तो अपने ही पांव पर छूरे लगाते हैं ना। बाप तो आते हैं सदा सुखी बनाने। समझदार सदा सुखी रहते हैं। बाप दादा को भूल कब पढ़ाई को छोड़ नहीं सकते हैं। नहीं तो बेरोगर्क हो जावेंगा। बहुत बच्चे समझते हैं बाबा को थोड़ेही मालूम पड़ता है। अरे परन्तु तुम जो करते हो अपने ही पांव पर कुल्हाड़ी मारते हो। आत्मा जानती है यह अच्छा काम है वा बुरा। हमको तो पूरा देहीअभिमानी बन बाप से वरसा लेना है। देह-अभिमान में आने से धोखा खाया जाता है। अच्छे2 को माया हप कर लेती है। एकदम पता नहीं पड़ता। समझ नहीं आती। माया अकल बिल्कुल ही चट कर देती है। नहीं तो स्टुडेन्ट लाईफ में टीचर से कोई दुश्मनी नहीं रखनी होती है। बाप कितनी अच्छी बातें बच्चों की उन्नति के लिये समझाते हैं। रोज जो समझाते हैं कल्प3 वही समझाते हैं। है ही कल्याण कारी बातें। कुछ न कुछ कल्याण जरूर भरा हुआ है। अन्दर खुशी रहती है हम यह जायेंगे। पढ़ाई छोड़ बैठ दे तो फिर बन न सकेंगे। फिर बाप का निन्दक ठौर न पाये। जैसे तकड़ा चढ़ते हैं वैसे उतरते भी हैं। ठीक पढ़ते नहीं हैं तो उनको समझाना चाहिए। रहमदिल बनना है ना। बाप भी समझाते हैं तुम क्या2 करते थे। जिसको गाली देते रहते थे वही तुमको अभी पढ़ा रहे हैं। तो ऐसे बाप से बड़ी सम्भाल चाहनी है। बाप समझाते हैं बहुत सहज है। भूल बात है कि विकार में नहीं जाना है। देह-अभिमान में नहीं आना है। माया कुछ न कुछ पाप कराती है। न बताने से बुधि को पा लेते हैं। फिर पद भ्रष्ट हो जाते हैं। बाप को बहुत2 याद करना है। बाबा बाबा करते हैं प्राण जाये। प्राण जब जाये तो बाप ही याद हो। और

समझानी बहुत सहज है चक्र की वह भी याद हो। बाबा जानते हैं माया आपोजीशन करेगी। बिल्कुल खबरदार रहना है। आधा को हराती है हप कर जाती है। आधा पुरुषार्थ अनुसार अपना वरसा पा लेते हैं। आधा को खा लेती है। बाप को बहुत प्यार से याद करो। इन जैसी प्यारी कोई चीज है नहीं। कोई प्राप्ती करा न सके। इस समय भक्ति का भी अन्त है। इसलिये उनका बहुत शो है। सभी का माथा फिरा हुआ है। बाप का ज्ञान कितना मीठा, शान्त बनाते हैं। हां कोई चर्ये खर्ये बन जाते हैं तो बड़ा धमचक्र मचाते हैं। उनको तकदीर खोटी कहा जाता है। नापास हो आते हैं। फेल बहुत होते हैं। अभी पता नहीं पड़ता है बच्चों को। ज्ञान लेते नहीं और नुकसान करते हैं। अन्दर सभा में छी छी आकर बैठते हैं। आकर कुछ सुनते हैं। परंतु कर्तव्य ऐसा उल्टा करते हैं वह भी फेल हो पड़ते हैं। कितना घाटा पड़ जाता है। तुम बच्चों को खबरदार रहना चाहिए। बाप कल्प2 आते हैं स्थापन करने तो वह जरूर स्थापन होगी। भगवान से कोई की दुश्मनी थोड़ेही होनी चाहिए। तुम सभी का कनेक्शन लेन-देन शिव बाबा से है। यह तो ट्रस्टी है। एक तो अन्दर में बड़ी खुशी बड़ा रिगार्ड रहना चाहिए। कितना अच्छी तरह से बाप बैठ समझाते हैं। एमआबजेक्ट कैसी रखी हुई है। और पायन्टस भी सभी देते रहते हैं। सहज बात है बाप की महिमा बताओ। कृष्ण के लिये भी क्लीयर समझाना है। वह पतित-पावन बाप टीचर गुरु नहीं बन सकता। हरेक सेन्टर वाला छोटा वा बड़ा हो। समझाने वाला सो अच्छा हो। जो बाप समझाते हैं वह बैठ समझावे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार भाना ही फर्स्ट सेकण्ड थर्ड। आज से 5000 वर्ष पहले भी हमको यही वरसा मिला था। शिवरात्रि पर क्या समझाना है हरेक सेन्टर वाले वहपायन्ट निकाल लिखे तो धारणा भी होगी। खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। बाप कहते हैं हम तुमको जो समझाता हूं सो फिर औरों को समझाना है। बाबा कोई किताब आदि थोड़ेही उठाते हैं। यह अन्दर में प्रैक्टीस करो। बाप कहते हैं देह के सभी सम्बन्ध छोड़ भाईकं याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाओगे। यूं तो तुम रोज शिवजयन्ति मनाते हो। रोज बाप समझाते हैं। जो अच्छी रीत धारणा करते हैं वह बैठ समझावे। बड़े2 चित्र फर्स्ट क्लास है। बाप समझाते हैं तुम पक्के बनो। यह ल0ना0 के चित्र अपने पास रख दो। घड़ी2 याद पड़े हम बाबा के पास पढ़ने को जाते हैं यह बनने लिये। तुम देखते रहना माया बड़ी बलवान है। बड़े दुश्मन का मुकाबला है। शिवरात्रि पर सभी समझाओ। हरेक पायन्ट अलग2 सो फिर बैठ लिखो। भल सभीटीचर को भगाओ। टीचरें जो अपने को होशियार समझती हैं वह भी भल आवे। खर्चा हुआ सो हर्जा नहीं। सभी अपना अनुभव सुनाओ। शिवजयन्ति पर सभी अपना अनुभव सुनावेंगे। बाबा हमको क्या समझाते हैं। मुख्य है दिल्ली। नहीं तो माया फिर घड़ी2 भूला देती है। माया रोगी जबरदस्त है। 5विकार बड़ा दुश्मन है। इन पर जीत पानी है। युध कैसे करो सो बाबा ईशारा देते हैं। याद करो देवीगुण धारण करो। बाकी पढ़ाई में क्या रखा है। इनको सहज योग सहज ज्ञान कहा जाता है। अपनी पहचान भी देते हैं। मैं तुम्हारा बाप हूं। कृष्ण को अगर बाप टीचर गुरु कहें मैं कह नहीं सकते हैं। ऐसे कहते2 तुम्हारी विजय तो होनी ही है। कहा जाता है ना घोर अंधियारे में सोये पड़े थे। आसुरी दुनिया तो है ना। भक्तिमार्ग ने कितना गोडरेज का ताला लगा दिया है। सत्य को कुछ समझते ही नहीं। जो सुनते वह वाह वाह सतसतकरते रहते हैं। बन्दरकी पूजा करते हैं ना। यह बन्दर भी बेहतर है मनुष्य से। मनुष्य तो बन्दर से भी बदतर हैं। तब तो जाकर माथा टेकते हैं। तुम समझा सकते हो मनुष्यों की क्या गति होती है। अच्छा। शिवजयन्ति जब तक आये बाबा की पायन्टस निकलती ही रहेंगी। अकेले कोई आकर बात पूछेंगे बाबा का इतना ध्यान नहीं जावेगा। मुरली में बहुतों को समझाने से अच्छा लगता है। बेहद का बाप हूं ना। बाप को तो आटोमेटीक बच्चे ही याद आवेंगे। बच्चों को मुरली सुनाने में मजा आता है। मैं कोई प्राईवेट थोड़ेही पढ़ाता हूं। सभी को पढ़ाता हूं। बाबा का तो विचार सागर मंथन चलता रहेगा। सभी ड्रामा के वश हैं ना। अच्छा।

अच्छा रूहानी बाप व दादा का का याद प्यार गुड नाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

-: शिव बाबा याद है? :-